UGC Approved Journal No – 40957
(IIJIF) Impact Factor- 5.172
Regd. No. : 1687-2006-2007 **ISSN 0974 - 7648**

J I G Y A S A

AN INTERDISCIPLINARY PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

Chief Editor : ***Indukant Dixit***

Executive Editor : ***Shashi Bhushan Poddar***

Editor
Reeta Yadav

Volume 14 **December 2021** **No. XII**

Published by
PODDAR FOUNDATION
Taranagar Colony
Chhittupur, BHU, Varanasi
www.jigyasabhu.blogspot.com
www.jigyasabhu.com
E-mail : jigyasabhu@gmail.com
Mob. 9415390515, 0542 2366370

- बिहार में पंचायती राज संस्थाओं का समीक्षात्मक अध्ययन — 377-383
  हेमंश प्रेमी, NET/JRF, राजनीति विज्ञान विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना
- स्त्री विमर्श के सरोकार — 384-388
  अंकिता आनंद, शोध छात्रा, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, बी. एन. एम. यू., मधेपुरा (बिहार)
- बाबा साहब समाज सुधारक के रूप में — 389-393
  डॉ. आशीष कुमार त्रिवेदी, प्रवक्ता, इतिहास विभाग, चौधरी खजान सिंह महाविद्यालय, उन्नाव
- जूलिया क्रीस्टिवा - स्त्री का समय स्त्री काल — 394-396
  डॉ. अलका सहारण, असी. प्रो., मिरांडा हाउस, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- विशिष्ट बालकों की शिक्षा — 397-406
  डॉ. धनजी पाठक, प्रवक्ता, मनोविज्ञान विभाग, इन्टर कॉलेज, डुमराँव (बक्सर)
- पत्रकारिता शब्द की मीमांसा, महत्व और उपयोग — 407-411
  डॉ. संजय कुमार मिश्र, पूर्व शोधार्थी, हिन्दी विभाग, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा (बिहार)
- गान्धी दर्शन और पर्यावरण संरक्षण : एक अध्ययन — 412-417
  डॉ. अनिल कुमार तिवारी, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र, सकलडीहा पी.जी. कॉलेज, चन्दौली
- स्थानीय शहरी निकायों में अनु. जातियों का राजनीतिक साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन : पटना नगर निगम (बिहार) का विशेष अध्ययन — 418-422
  मुरारी शंकर, शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोध गया
- राम की शक्ति पूजा के सामाजिक राजनीतिक निहितार्थ — 423-426
  डॉ. दीपक सिंह, सहायक प्राध्यापक (हिन्दी), राजीव गांधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
  अम्बिकापुर, सरगुजा, छत्तीसगढ़

राम की शक्ति पूजा के सामाजिक राजनीतिक निहितार्थ

*डॉ. दीपक सिंह **

राम की शक्तिपूजा मिथकीय आधार पर लिखी गई आधुनिक कविता है | यह कविता तत्कालीन भारतीय समाज और राजनीति का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करती है | विभिन्न आधुनिक तकनीकों से लैस ब्रिटिश साम्राज्य के समक्ष भारतीय जन का संघर्ष मौलिक रास्तों की तलाश किये बिना संभव नहीं था | स्वतंत्रता आन्दोलन के नेतृत्वकर्ता के रूप में गांधी इसी तरह के मौलिक रास्तों की तलाश करते हैं | दूसरी ओर सीता की मुक्ति के रूप में नारी-मुक्ति इस कविता के केंद्र में है | यह कविता न केवल तत्कालीन यथार्थ का चित्र प्रस्तुत करती है वरन वर्तमान परिस्थितियों में भी प्रासंगिक है |

बीज शब्द-अन्याय,मौलिकता,सामजिक यथार्थ ,राजनीतिक चेतना,स्वतंत्रता आन्दोलन,आधुनिक मानव,मिथक,नारी-मुक्ति

हिन्दी साहित्य के इतिहास में छायावाद का समय 1918 से लेकर 1936 तक का माना जाता है | निराला की कविता 'राम की शक्तिपूजा ' का रचनाकाल 1936 है | मतलब कि यह कविता छायावाद और प्रगतिवाद के संधिकाल में लिखी गई कविता है | इसके साथ ही यह वर्ष हिन्दी साहित्य में गोदान और कफ़न जैसी कालजयी रचनाओं का वर्ष है | इस समय तक भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन की मजबूत उपस्थिति अंग्रेज महसूस कर चुके थे | लखनऊ के प्रगतिशील अधिवेशन में प्रेमचंद स्पष्ट रूप से साहित्य को राजनीति के आगे चलने वाली मशाल के रूप में प्रतिष्ठित कर रहे थे | इन सारी स्थितियों के आलोक में जब हम राम की शक्ति पूजा कविता को पढ़ते हैं तो उसके गहरे सामजिक-राजनेतिक निहितार्थ सामने आते हैं | "क्योंकि इसके भीतर समूचा देशकाल,संस्कृति की अर्थवत्ता ,मनोविज्ञान,मनुष्य का वर्तमान और पारम्परिक संघर्ष जो आने वाले युग का संघर्ष भी है सब एकत्रित,संघनित हो गया है |"1

निराला राम की शक्ति पूजा कविता का आधार वाल्मीकि या तुलसीदास की रामकथा को न बनाकर जब बांग्ला के कृतिवास रामायण को बनाते हैं तो वह केवल इसलिए ही नहीं कि उनका बचपन बंगाल में बीता था बल्कि इसलिए भी क्योंकि यहाँ शक्ति केंद्र में थी | सीता के रूप में नारी-मुक्ति केंद्र में है | "कृतिवास ने अपने कथानक के लिए अनेक अतिप्राकृततत्वों का सन्निवेश भी किया है पर निराला ने अपनी कथा को मनोवैज्ञानिक भूमि पर अधिष्ठित कर दार्शनिक भवन के समावेश द्वारा उसे आधुनिक युग के अनुकूल बनाया है | कृतिवास की कथा शुद्ध पौराणिक है | अतः उसके अर्थ की भूमि एक और सपाट है | लेकिन निराला का काव्य अर्थ की कई भूमियों का स्पर्श करता है और उसमें युगीन चेतना – आत्मसंघर्ष –का भी बड़ा प्रभावकारी चित्र प्रस्तुत किया गया है |"2

यह कविता भले ही मिथकीय आधार पर लिखी गई हो किन्तु भारतीय स्वतंत्रता-आन्दोलन ने जिस तरह की चेतना का जनसंचार जनमानस में किया था, उसकी स्पष्ट अभिव्यक्ति कविता में देखी जा सकती है | कविता की शुरुआत 'रवि हुआ अस्त' पंक्ति से होती है,जिसके पश्चात 18 संस्कृत निष्ठ पंक्तियों के माध्यम से निराला पिछले दिनों हुए युद्ध में राम और रावण की सेनाओं की स्थति का वर्णन करते हैं | रवि का अस्त होना दिन के ढलने के साथ-साथ रविकुल भूषण राम की हताशा –निराशा की अभिव्यक्ति भी है | एक ऐसा व्यक्तित्व जो भारतीय जनमानस में ईश्वर के रूप में बसा हुआ है निराला उसका चित्रण एक साधारण मनुष्य के रूप में करते हैं | आधुनिक युग की वैज्ञानिक सोच का स्पष्ट

---

* सहायक प्राध्यापक (हिन्दी), राजीव गांधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
अम्बिकापुर, सरगुजा, छत्तीसगढ़

प्रभाव यहाँ देखा जा सकता है | यद्यपि राम ईश्वर है उनके पास तमाम मंत्र युक्त बाण हैं लेकिन वे तब तक काम नहीं कर सकते जब तक शक्ति रावण के साथ हैं | उस शक्ति को अपने साथ ले आने के लिए नवीन तरीकों की खोज करनी ही होगी और कोई चारा नहीं है | यह आधुनिक मनुष्य की चेतना है | जिसके लिए तुलसीदास कहते हैं कि "राम कथा सुन्दर करतारी ,संशय विहग उड़ावन हारी " 3 उन्हीं के लिए निराला लिखते हैं कि

"स्थिर राघवेन्द्र को हिला रहा फिर –फिर संशय
रह-रह जग जीवन में उठता रावण-जय भय"4

यह मध्याकालीन और आधुनिक चेतना का अंतर है | यह मिथक और यथार्थ का अंतर है | आधुनिक समाज में संशय अनिवार्य है क्योंकि उसे ज्ञान की कसौटी पर परखना अत्यंत आवश्यक है | राम के मन में यह निराशा घर कर चुकी है कि अब इस युद्ध में विजय मिलना संभव नहीं है क्योंकि अभी तक जितने तरीके उनके पास थे उन्होंने सब अपना लिए और वो यह भी जानते हैं कि मूल समस्या कहाँ है | 'अन्याय जिधर हैं उधर शक्ति' केवल एक कविता पंक्ति न होकर इस पूरे युग का मुहावरा है | "यहाँ आकर ये दोनों ही बातें स्थापित हो जाती हैं-कविता के केंद्र में सीता का होना और राम का इस कविता में अपनी सम्पूर्ण अलौकिकता के साथ पूर्णतः मानवीय रूप में प्रकट होना |"5

राम की शक्तिपूजा कविता में राम का चरित्र एक ऐसा चरित्र है जिसमें कई व्यक्तित्व एक साथ समाहित हैं | वह निराला भी हैं,गाँधी भी हैं और तत्कालीन जनमानस भी | अगर इस कविता का मूल्यांकन राजनीतिक दृष्टि से करें तो पूरे भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन की छवि इस कविता में दिखाई पड़ती है | महात्मा गांधी के रूप में एक कुशल नेतृत्वकर्ता के होने के बावजूद अंग्रेजी शासन से लड़ना इतना आसान नहीं था | जो चिंता इस कविता में राम के समक्ष थी ठीक वही चिंता गांधी के समक्ष थी | 1922 के असहयोग आन्दोलन के समय घटित चौरी –चौरा की घटना के साथ ही 1931 में भगत ,राजगुरु और सुखदेव की फांसी से पूरा जनमानस विक्षुब्ध था | ऐसे में यह बात बार-बार मन में आना लाजमी था कि इस साम्रज्यवादी ब्रिटिश शासन से निपटाना इतना आसान नहीं है | इसके लिए 'शक्ति की मौलिक कल्पना' की आवश्यकता थी | गांधी जी निरंतर इस तरह की मौलिक कल्पनाएँ कर रहे थे जिसके बारे में अंग्रेज अंदाजा भी नहीं लगा सकते थे | चाहे वह सविनय अवज्ञा आन्दोलन के रूप में नमक –कानून का उल्लंघन हो या भारत-छोड़ो आन्दोलन के रूप में करो या मरो की सुदृढ़ संकलपना | जाहिर सी बात है कि शक्ति अन्याय के पक्ष में थी और उसे न्याय के पक्ष में लाने के लिए उसके तरीकों से लड़ना संभव नहीं था | एक दूसरी बात बार-बार विफल होने के बावजूद गाँधी भी निरंतर डटे रहे ठीक राम की तरह 'वह एक और मन रहा राम का जो न थका' | यह निराला की युगीन चेतना दृष्टि थी जिसके प्रभाव में राम की कथा एक नवीन आकार लेती दिखाई पडती है | "यह एक पूरे बोध की कविता है | मनुष्य के भीतर चलाने वाले द्वंद्व के बीच धारण करने योग्य धर्म की कविता है | अपने समय की जो सारी विभीषिकाएँ हैं उन्हें समेटते हुए कवि किस तरह जीवन को अर्थ देता है और पराजय में हाथ थाम कर विजय के शिखर तक कैसी जद्दोजहद से पहुंचता है यह देखते ही बनता है | यह इस कविता की सार्थकता और सिद्धि है जो अपने को बार-बार पढ़वाती है | बार-बार नई लगती है,क्योंकि क्षणे-क्षणे यान्नवतामुपैतितदैव रूप रमणीयताया |"6 निराला की सम्पूर्ण कविता मुक्ति की कविता है | यह मुक्ति एक रेखीय नहीं है जहाँ एक ओर वह विदेशी पराधीनता से मुक्ति है वहीं दूसरी तरफ देश के भीतर प्रचलित तमाम विभेदों –रूढ़ियों और परम्पराओं से मुक्ति की कविता है | चतुरी चमार और कुल्लीभाट से लेकर पंचवटी-प्रसंग जैसी कविता और छंद के बंधनों से मुक्ति उनकी इसी मुक्तिकामी चेतना का उदाहरण है | राम की शक्तिपूजा उनकी इसी मुक्तिकामी चेतना का परिणाम है | किन्तु इस मुक्ति के मार्ग में अनेक बाधाएं हैं | हमारे देश में जिसने भी किसी तरह की मुक्ति की कामना की उन्हें विभिन्न प्रकार की बाधाओं का सामना करना पडा और इसका कारण हमेशा से यही रहा कि शक्ति उन लोगों के हाथों में थी जो लोगों के ऊपर शासन कर रहे थे | यह भी तथ्य है कि मुक्ति कभी अकेले नहीं मिलती ,मुक्ति के प्रयास सामूहिक प्रयास होते हैं | राम की शक्तिपूजा कविता में राम का शक्ति आराधन अकेले अम्भव

नहीं था | जब सभी लोग मिलकर विभिन्न मोर्चों पर अपनी भूमिका सम्हालते हैं तब यह वरदान आता है –"होगी जय होगी हे पुरुषोत्तम नवीन|"7

इस कविता का सामाजिक पक्ष सीता के रूप में नारी-मुक्ति का केंद्र में होना है | यह सारा युद्ध किसलिए?एक नारी की मुक्ति के लिए | मध्यकाल तक जो भोग्या-मात्र थी यहाँ वह सम्पूर्ण कविता के केंद्र में है | राम इस युद्ध की विफलता के पश्चातवर्ती परिणाम की जैसे ही कल्पना करते हैं घोर दुःख से भर उठते हैं | भयानक निराशा की स्थिति में उन्हें जानकी की याद आती है –

"ऐसे क्षण अन्धकार घन में जैसे विद्युत्
जागी पृथ्वी-तनया कुमारिका-छवि अच्युत
xxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxxx
सिहरा तन,क्षण-भर भूला मन लहरा समस्त
हर धनुर्भंग को पुनर्वार ज्यों उठा हस्त
फूटी स्मिति सीता-ध्यान-लीन राम के अधर
फिर विश्व –विजय-भावना हृदय में आयी भर"8

सीता की याद आते ही राम विश्वविजय की भावना से भर उठाते हैं लेकिन दूसरे ही क्षण उन्हें युद्ध में घटी घटनाओं की याद आती है कि कैसे उनके सारे प्रयास निष्फल हो रहे थे और राम दुबारा गहरी निराशा में चले जाते हैं जिसका परिणाम कुछ इस प्रकार है-

"लख शंकाकुल हो गए अतुल-बल शेष-नयन,-
खिंच गए दृगों में सीता के राममय नयन
फिर सूना –हंस रहा अट्टहास रावण खल-खल
भावित नयनों से सजल गिरे दो मुक्तादल |"9

इस पूरी कविता में स्त्री केंद्र में है चाहे वह सीता के रूप में हो चाहे अंजना के रूप में हो चाहे शक्ति के रूप में | राम साधना के अंतिम क्षणों में निराश होते हैं तो उन्हें अपनी माँ की याद आती है | माँ जो उन्हें कमल-नयन कहती थीं | इस तरह से अन्याय का शक्ति के पक्ष में होना और उस अन्याय से लड़ने की प्रेरणा के रूप में एक स्त्री की उपस्थिति इस कविता के सामाजिक आयाम को विस्तृत करता है | वह भारतीय समाज के मनोविज्ञान की कल्पना है | माँ ही है जो अपने उग्र बालक को शांत करा सकती है,वो भी डांटकर नहीं बल्कि भावनात्मक तरीके से | कविता में मित्र के रूप में विभीषण की उपस्थिति भारतीय समाज का मनोवैज्ञानिक दृष्टि से किया गया चित्रण है | जो प्रकट रूप में भले ही राम के सहायक के रूप में हैं किन्तु जिसका मूल उद्देश्य स्वार्थसिद्धि है,इसीलिये विभीषण के वचनों का राम पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता

"जैसे ओजस्वी शब्दों का जो था प्रभाव
उससे न इन्हें कुछ चाव, न हो कोई दुराव ;
ज्यों हों वे शब्द मात्र-मैत्री की समनुरक्ति,
पर जहाँ गहन भाव के ग्रहण की नहीं शक्ति |"10

इस कविता के राम स्वयं निराला भी हैं | हम सब यह जानते हैं लेखन के शुरुआती दिनों में निराला को अनेक प्रकार की बाधाओं का सामनाकरना पडा था जिसका उल्लेख वे अपनी कविता हिन्दी के सुमनों के प्रति पात्र में भी करते हैं और सरोज-स्मृति में भी –

"ईर्ष्या नहीं मुझे कुछ यद्यपि
मैं ही वसंत का अग्रदूत
ब्राह्मण-समाज में ज्यों अछूत
मैं रहा आज यदि पार्श्वछावी"11

निराला के जीवन के संघर्ष हम सरोज-स्मृति में देख सकते हैं | बचपन से ही निराला एक के बाद एक अपनों को खोते रहे | विपरीत आर्थिक स्थिति में भी उन्होंने कभी धैर्य नहीं खोया | संपादकों

की सारी उपेक्षा अपने व्यंग्य के सहारे सहते रहे लेकिन हार नहीं मानी | किन्तु सरोज की मृत्यु तक आते –आते वे बुरी तरह से ठक चुके थे और जब हम राम की शक्तिपूजा और सरोज स्मृति को एक साथ देखते हैं तो निराला और राम के चरित्र की एकरूपता को समझ पाते हैं –सरोज स्मृति में वे कहते हैं-

दुःख ही जीवन की कथा रही
क्या कहूँ आज जो ईं कही !
हों इसी कर्म पर वज्रपात
यदि धर्म,रहे नत सदा माथ"12

वहीं राम की शक्तिपूजा के राम कहते हैं –

धिक् जीवन को जो पाता ही आया विरोध
धिक् साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध !
जानकी हाय उद्धार प्रिया का हो न सका "13

"इस कविता के पीछे जीवन की कौन सी अनुभूति छिपी थी ,इसे हम तब अच्छी तरह समझेंगे जब इसके साथ सरोज-स्मृति,वनबेला,और गीतिका के कवि जीवन संबंधी अन्य गीतों पर दृष्टि डालेंगे| इन रचनाओं का उत्कट आत्मनिवेदन नाटकीय रूप से यहाँ प्रस्तुत किया गया है | कवि अपने प्रति इतना तटस्थ हो गया कि सहसा मुख्य पात्र से उसके तादात्म्य को हम समझ नहीं पाते |"14

इस तरह से हम देखते हैं कि राम की शक्ति पूजा तात्कालीन भारतीय समाज और राजनीति से लेकर आज के यथार्थ तक अपने दायरे को विस्तृत करती है | शक्ति का अन्याय के पक्ष में होना एक ऐसा सच है जिससे कबीर से लेकर प्रेमचंद तक सबने दर्ज किया है | आज यह बात और विकराल रूप में हमारे सामने उपस्थित है | ऐसे में इस कविता को जितनी बार पढ़ा जाता है वह नए अर्थों के साथ हमारे सामने उपस्थित होती है |

सन्दर्भ :

1. सम्पादक कुमार राजेंद्र: निराला होने का अर्थ और तीन लम्बी कवितायेँ,अभिव्यक्ति प्रकाशन पृष्ठ सं.-83
2. सिंह बच्चन :क्रांतिकारी कवि निराला, विश्वविद्यालय प्रकाशन,वाराणसी पृष्ठ सं.-72
3. दास तुलसी: रामचरितमानस,(सचित्र,सटीक मोटा टाइप) गीता प्रेस गोरखपुर बालकाण्ड पृष्ठ सं.-126
4. संपादक नवल नंदकिशोर : निराला रचनावली भाग-1 राजकमल प्रकाशन पृष्ठ सं.-330
5. सम्पादक कुमार राजेंद्र: निराला होने का अर्थ और तीन लम्बी कवितायेँ,अभिव्यक्ति प्रकाशन पृष्ठ सं.-45
6. वही पृष्ठ सं.-92
7. संपादक नवल नंदकिशोर : निराला रचनावली भाग-1 राजकमल प्रकाशन पृष्ठ सं.-338
8. वही पृष्ठ सं.-331
9. वही
10. वही पृष्ठ सं.-334
11. वही पृष्ठ सं.-351
12. वही पृष्ठ सं.-324
13. वही पृष्ठ सं.-337
14. शर्मा रामविलास :निराला राधाकृष्ण प्रकाशन 2000 पृष्ठ सं.-98

***